

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान1, परिचय और पृष्ठभूमि

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 1, परिचय और पृष्ठभूमि है।

हम अगले कई सत्रों में बाइबल की आखिरी किताब, प्रकाशितवाक्य की किताब पर काम करने जा रहे हैं।

संभवतः ईसाई धर्म के इतिहास में किसी भी किताब को इतनी गलत तरीके से नहीं समझा गया या उसकी अनदेखी की गई और उसकी उपेक्षा की गई जितनी बाइबिल की आखिरी किताब की गई है। यह दिलचस्प है जब आप पुस्तक के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो कुछ कारणों से इसे न्यू टेस्टामेंट कैनन में शामिल होने में थोड़ी समस्याएं भी आईं, जिन पर हम चर्चा करेंगे। लेकिन जब आप सोचते हैं, जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पास जाते हैं, तो इसे उचित परिप्रेक्ष्य में रखना और यह महसूस करना सहायक होता है कि हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक को पढ़ने और समझने की कोशिश करने के चर्च के प्रयास की एक लंबी परंपरा में खड़े हैं।

इसलिए, उनकी कुछ गलतफहमियों और गलतफहमियों को समझना और कुछ गलतियों से बचना मददगार है, लेकिन यह भी समझना उपयोगी है कि वे इसे कैसे पढ़ते हैं और सकारात्मक रूप से यह समझना कि हम चर्च की कुछ अंतर्दृष्टियों को कैसे उपयुक्त बना सकते हैं। जैसे ही आप चर्च द्वारा रहस्योद्घाटन की पुस्तक को स्वीकार करने और समझने के इतिहास का अध्ययन करते हैं, अधिकांश लोगों को एहसास होता है कि चर्च को मूल रूप से रहस्योद्घाटन के दो दृष्टिकोणों की विशेषता दी गई है। नंबर एक वह है जिसे मैं बस जुनून कहता हूं।

अर्थात्, कुछ ईसाइयों, कुछ चर्चों और आधुनिक समय तक चर्च के इतिहास की अवधियों ने रहस्योद्घाटन को एक अस्वास्थ्यकर जुनून के रूप में माना है। यानी, ऐसा व्यवहार करना जैसे कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पूरी बाइबिल में एकमात्र पुस्तक हो और इससे जुड़ी बाकी सभी चीजों को नजरअंदाज किया जा सकता है। जैसा कि आप में से कुछ लोग जानते होंगे, और आप शायद कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के बारे में सोच सकते हैं जिनका पूरा मंत्रालय चर्च की वेबसाइटों के लिए रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने और उसे खोलने के लिए समर्पित रहा है।

आपको बस Google रहस्योद्घाटन या सर्वनाश करना है और यह आश्चर्यजनक है कि वे सभी वेबसाइटें जो रहस्योद्घाटन को समझने का प्रयास करती हैं, आमतौर पर हमें यह समझने में मदद करने की कोशिश करती हैं कि रहस्योद्घाटन वास्तव में हमारे दिन में घटनाओं की भविष्यवाणी कैसे कर रहा है और वे कैसे सामने आ रहे हैं और पहले से ही पूरे हो रहे हैं। इसके पीछे एक धारणा यह है कि वास्तव में अब हमारे पास रहस्योद्घाटन पढ़ने की कुंजी है। संभवतः अपनी सदी को छोड़कर हर दूसरी सदी में, हम अंधेरे में होते हैं और अब जब हम दुनिया की

और देखते हैं तो हम इन सभी चीजों को घटित होते हुए देख सकते हैं और अचानक हमारे पास किताब के रहस्यों और रहस्यों को खोलने की कुंजी है। रहस्योद्घाटन।

इसके सबसे हाल के व्यापक साहित्यिक प्रदर्शनों में से एक सुप्रसिद्ध लेफ्ट बिहाइंड श्रृंखला थी और यद्यपि यह श्रृंखला काल्पनिक है और इसका उद्देश्य काल्पनिक होना है, साथ ही इसका उद्देश्य काल्पनिक प्रारूप में यह चित्रित करना है कि लेखक वास्तव में क्या सोचते थे या लेखक कैसे सोचते थे सचमुच सोचा कि पुराने और नए नियम में प्रकाशितवाक्य और अन्य भविष्यसूचक ग्रंथ पूरे होंगे और वे कैसे प्रकट होंगे। यह जो करता है वह यह है कि यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक की छवियों और दृश्यों को उन घटनाओं के साथ जोड़ता है जो उनके अनुसार 21वीं सदी में हमारे अपने आधुनिक समय में परिलक्षित होती हैं और काल्पनिक रूप में प्रदर्शित करती हैं कि कैसे वे घटनाएँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ सहसंबद्ध और पंक्तिबद्ध होती हैं। . तो धारणा यह है कि जॉन वास्तव में 21वीं सदी में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी कर रहा था और इसलिए उसने इसे लिखा।

जैसा कि एक लेखक ने कहा, ऐसा लगता है जैसे जॉन एक समय यात्री था और उसने 21वीं सदी में यात्रा की और इन सभी घटनाओं को देखा। अब वह अपने पहली सदी के लेखकों के पास वापस जाते हैं और इन्हें संभवतः किसी ऐसे प्रारूप में लिखते हैं जिसका उन्होंने कभी अनुमान नहीं लगाया होगा और कभी समझ नहीं पाएंगे, लेकिन अब 20वीं सदी में, हमारी 21वीं सदी के तकनीकी, राजनीतिक युग और वातावरण में, हम अचानक ही आपके पास यह समझने की कुंजी है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में कैसे पूरी हो रही है। तो यह एक दृष्टिकोण है जो चर्च के इतिहास की कई अवधियों, पुस्तक के प्रति जुनून, रहस्योद्घाटन की पुस्तक के प्रति आकर्षण को दर्शाता है, जो आम तौर पर यह समझाने का प्रयास है कि रहस्योद्घाटन वास्तव में उन घटनाओं की भविष्यवाणी कैसे कर रहा है जो चौथी शताब्दी या 15 वीं शताब्दी में सामने आ रही हैं या 20वीं या अब 21वीं सदी।

उसके प्रति जिस प्रकार का विपरीत दृष्टिकोण है वह पुस्तक की पूर्ण उपेक्षा है। यानी, अधिकांश लोगों के लिए, जब वे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कुछ शानदार छवियों और कुछ अजीब कल्पनाओं और प्रतीकों को पढ़ते हैं, तो वे वास्तव में निश्चित नहीं होते हैं कि इसका क्या मतलब निकाला जाए। तो, सबसे सरल उपाय यह है कि इसे नज़रअंदाज कर दिया जाए और पॉल के पत्रों या गॉस्पेल की अधिक परिचित कहानियों या ऐसी ही किसी सुरक्षित जगह पर चले जाएं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, जब आप अपनी बाइबिल में प्रकाशितवाक्य अध्याय 9 खोलते हैं, तो आप इन टिड्डियों का यह अजीब विवरण पढ़ते हैं जो झुंड में आती हैं और उड़ जाती हैं, और जब आप इसे पढ़ते हैं, तो वे अन्य टिड्डियों की तरह नहीं होती हैं जिनका आपने कभी सामना किया हो और आवाज की हो। किसी साइंस फिक्शन हॉरर फिल्म या उसके जैसा कुछ। तो, अध्याय 9 के पद 2 से शुरू करते हुए, प्रकाशितवाक्य के लेखक कहते हैं, जब उसने अथाह कुंड को खोला, तो उसमें से एक विशाल भट्टी से निकलने वाले धुएँ के समान धुआं निकला। अथाह कुंड के धुएँ से सूर्य और आकाश अन्धेरा हो गया, और उस धुएँ में से टिड्डियाँ पृथ्वी पर उतरतीं, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं के समान शक्ति दी गई।

उनसे कहा गया था कि वे पृथ्वी की घास या पौधों या पेड़ों को नुकसान न पहुँचाएँ, बल्कि केवल उन लोगों को नुकसान पहुँचाएँ जिनके माथे पर भगवान की मुहर नहीं थी। उन्हें मारने की नहीं बल्कि साढ़े पाँच महीने तक यातना देने की शक्ति दी गई थी। और मैं कुछ छंद छोड़ दूंगा जहां लेखक इन टिड्डियों का वर्णन करना शुरू करता है।

ये टिड्डियाँ युद्ध के लिए तैयार घोड़ों की तरह दिखती हैं। अब आपके पास ये टिड्डियाँ हैं जो धुएँ से इस खाई से बाहर आ रही हैं, लेकिन अब लेखक का कहना है कि वे वास्तव में लड़ाई के लिए तैयार घोड़ों की तरह दिखते हैं। फिर वह कहता है, वे अपने सिरों पर सोने के मुकुट के समान कुछ पहनते थे, और उनके मुख मनुष्य के मुख के समान थे।

उनके बाल किसी महिला के बाल जैसे थे। उनके दाँत सिंह के दाँतों के समान थे। उनके कवच लोहे के कवच के समान थे, और उनके पंखों की ध्वनि युद्ध में दौड़ते हुए बहुत से घोड़ों और रथों की गड़गड़ाहट के समान थी।

उनकी पूँछें बिच्छुओं की तरह डंक मारती थीं और उनकी पूँछों में लोगों को पाँच महीने तक पीड़ा पहुँचाने की शक्ति थी। मैं वहीं रुकूंगा। हम उस पाठ को बाद में देखेंगे।

लेकिन जानवरों जैसी विशेषताओं और कीड़ों जैसी विशेषताओं के अजीब संयोजन पर ध्यान दें, और फिर मानव जैसी विशेषताओं और जानवरों की विशेषताओं को भी, सभी इस लगभग अजीब छवि में संयोजित किया गया है जो एक विज्ञान कथा हॉरर फिल्म या उसके जैसी किसी चीज़ के लिए अधिक उपयुक्त है। लेकिन लोग इसे पढ़ते हैं, और आम तौर पर प्रतिक्रिया यह होती है कि वे किसी किताब से इतने भ्रमित हो जाते हैं कि उसे नज़रअंदाज़ करना ही सुरक्षित होता है। और हो सकता है कि कुछ लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रति आसक्त हो चुके लोगों से इतने निराश हो गए हों कि फिर से प्रकाशितवाक्य को दरकिनार करना और पॉल के पत्रों या गॉस्पेल की सुरक्षित पुस्तकों की ओर पीछे हटना बहुत आसान हो गया है।

कई लोगों के लिए रहस्योद्घाटन अभी भी सात मुहरों वाली एक किताब है। इस तथ्य के बावजूद कि प्रकाशितवाक्य सीलबंद होने का दावा करता है, कई लोगों के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अभी भी सीलबंद है। जैसा कि आप में से कुछ लोग शायद जानते हैं, और जाने-माने जॉन कैल्विन भी उतने ही प्रतिभाशाली विचारक थे, और यद्यपि उन्होंने न्यू टेस्टामेंट की प्रत्येक पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखी थी, लेकिन उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक भी टिप्पणी नहीं लिखी।

और संभवतः रहस्योद्घाटन पर कुछ लेखकों ने उनके नेतृत्व का अनुसरण करना बेहतर किया होगा। और इसलिए, अधिक से अधिक हम इस पुस्तक की उपेक्षा करते हैं और हम इसे विद्वानों या उन लोगों के हाथों में छोड़ना पसंद करेंगे जो इस अजीब पुस्तक को समझने का प्रयास करने के लिए बेहतर उपयुक्त हैं। इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि जब आप चर्च के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो या तो हम किताब के प्रति आसक्त हो जाते हैं और उसका अर्थ निकालने की कोशिश करते हैं, और पूरे मंत्रालयों को किताब के इर्द-गिर्द केंद्रित कर देते हैं, आमतौर पर

हमारे यहां चल रही घटनाओं के आलोक में इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं। अपना दिन, या हम इसकी उपेक्षा करते हैं।

यह इतना अजीब और अजीब है, हम इसके आदी नहीं हैं, हमने ऐसा कुछ भी नहीं देखा है, इसलिए इसे नज़रअंदाज़ करना और इसका अर्थ समझने के लिए इसे विशेषज्ञ के हाथों में छोड़ना आसान है। चर्च के बाहर भी, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर प्रतिक्रिया होती है, आमतौर पर संदेह की। कुछ हिंसक कल्पनाओं के कारण, चर्च के बाहर के लोगों द्वारा रहस्योद्घाटन को अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा जाता है और यहाँ तक कि किसी के लिए भी इसका कोई मूल्य होने के कारण इसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया जाता है।

उदाहरण के लिए, जर्मन विचारक फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा था, रहस्योद्घाटन पूरे दर्ज इतिहास में प्रतिशोध का सबसे उग्र विस्फोट है। जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा कि रहस्योद्घाटन एक नशेड़ी के दर्शन का एक जिज्ञासु रिकॉर्ड था। इस प्रकार उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या की।

इसलिए चर्च के बाहर भी, लोग अभी भी निश्चित नहीं हैं कि इस पुस्तक का क्या किया जाए। और सबसे अच्छी स्थिति में, इसे अत्यधिक संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। और अक्सर सभी प्रकार की बुराइयों और समाज की समस्याओं और बुराइयों आदि के स्रोत के रूप में देखा जाता है।

लेकिन रहस्योद्घाटन की पुस्तक, एक ही समय में, चर्च के बाहर भी, अक्सर हमारी कई फिल्मों का स्रोत और प्रेरणा होती है। हमारी फिल्मों का शीर्षक द एपोकैलिप्स या ऐसी फिल्में हैं जिनका विषय रहस्योद्घाटन की किताब से निकला है। इसलिए चर्च के बाहर भी, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का हमारे समाज पर प्रभाव पड़ा है।

इसलिए जिस दुविधा के साथ हमारे चर्च में और हमारे चर्च के बाहर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ व्यवहार किया जाता है, उसे देखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि पुस्तक पर फिर से नज़र डालना आवश्यक है। यदि हम मानते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ईश्वर का वचन है और ईश्वर के वचन और उनके लोगों के प्रति उनके रहस्योद्घाटन के हिस्से के रूप में पवित्रशास्त्र के सिद्धांत में शामिल है, तो ऐसा लगता है कि हमें फिर से रुकने की जरूरत है और शायद खुद को पुस्तक की ओर पुनः उन्मुख करने और एक और नजर डालने की जरूरत है। इस पर। और ठीक यही मैं इस पाठ्यक्रम में करना चाहता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ने में कुछ डर और कुछ संदेह को दूर करना शुरू कर दूँ और साथ ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ कुछ जुनूनी और गैर-जिम्मेदाराना तरीकों से भी व्यवहार करना शुरू कर दूँ। वास्तव में, विडंबना यह है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक, जिसका शीर्षक रहस्योद्घाटन है, ग्रीक शब्द एपोकैलिप्सिस से आया है, जिसका अर्थ है अनावरण या अनावरण। और इसलिए रहस्योद्घाटन का मुख्य अर्थ अपने संदेश को छिपाना नहीं है और इसे इतना रहस्यमय और गुप्त रूप से छिपाना है कि कोई भी इसे संभवतः समझ नहीं सकता है।

लेकिन वास्तव में, बिल्कुल शुरुआत में, अनावरण या खुलासा के रूप में रहस्योद्घाटन वास्तव में भगवान की सच्चाई को प्रकट करने और भगवान के वचन को उनके लोगों और उनके चर्च के

सामने प्रकट करने के लिए है। इसका अर्थ इसके अर्थ को अस्पष्ट करना और छिपाना नहीं है, बल्कि इसे उजागर करना और प्रकट करना है। हालाँकि, ऐसा करने की कुंजी खुद से यह पूछना है कि रहस्योद्घाटन किस प्रकार की पुस्तक है और यह कैसे अपने अर्थ को उजागर और प्रकट करती है। जैसा कि एक ब्रिटिश विद्वान रिचर्ड बाउकॉम ने कहा, चर्च के इतिहास में रहस्योद्घाटन को समझने में समस्या का एक हिस्सा और कई गलत व्याख्याएं यह समझने में असफल होने से शुरू हुई हैं कि रहस्योद्घाटन वास्तव में किस प्रकार की पुस्तक है।

तो, पहली चीज़ जो मैं करना चाहता हूँ वह यह है कि हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को कैसे पढ़ना चाहिए। यह किस प्रकार की किताब है? और यह सबसे पहले क्यों लिखा गया था? और इसलिए मैं परिचयात्मक खंडों में दो चीज़ें करना चाहता हूँ, जिससे पुस्तक को वास्तव में अधिक विस्तार से देखा जा सके। और वह है दो प्रश्नों की जांच करना। नंबर एक, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सबसे पहले क्यों लिखी गई थी? वे कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने पुस्तक के उत्पादन और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखन को घेर लिया? सबसे पहले यूहन्ना को ये दर्शन क्यों मिले? ऐतिहासिक रूप से क्या चल रहा था? और वे कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण इस पुस्तक का लेखन हुआ? और फिर दूसरा, इसके साथ ही यह सवाल पूछना कि यह किस तरह की किताब है? जैसा कि विद्वान कहते हैं, यह पुस्तक किस साहित्यिक शैली, किस साहित्यिक प्रकार से संबंधित है? चूँकि यही वह चीज़ है जो हमें समझने, समझने में मदद करेगी कि यह पुस्तक किस बारे में है? यह क्या करने का प्रयास कर रहा है? इस अजीब, कम से कम हमारे लिए, और इस अनोखी किताब को तैयार और प्रेरित करके भगवान अपने लोगों को क्या कहना और प्रकट करना चाह रहे थे? तो, मैं जो करना चाहता हूँ, सबसे पहले मैं यह प्रश्न पूछकर शुरुआत करना चाहता हूँ कि यह पुस्तक क्यों लिखी गई? या फिर किताब को उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और परिस्थितियों के आलोक में पढ़ना है।

यह दिलचस्प है, कि जब हम शेष नए नियम और पुराने नियम को भी पढ़ते हैं, जब हम उन पुस्तकों को पढ़ते हैं, तो हमें आम तौर पर उन पुस्तकों को पढ़ना सिखाया जाता है, सबसे पहले, उन ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रकाश में जिनके लिए वे पुस्तकें हैं प्रतिक्रियाएँ थीं। इसलिए, जब आप गैलाटियन्स की पुस्तक पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, नए नियम में, तो आपको उसे उस संकट या समस्या या स्थिति के प्रकाश में पढ़ना सिखाया जाता है जिसे पॉल संबोधित कर रहा था। वह एक ऐसे समूह को संबोधित कर रहे थे, जिसे हम अक्सर यहूदीवादी कहते हैं, जो गैर-यहूदी ईसाइयों को मूसा के कानून के प्रति समर्पण करने के लिए एक संकेत के रूप में लाने की कोशिश कर रहे थे कि वे वास्तव में भगवान के लोग थे।

और इसलिए, हम गैलाटियन्स को इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उन ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रकाश में पढ़ते हैं जिन्हें पॉल संबोधित कर रहा था, इससे पहले कि हम इसे अपने जीवन में समझने की कोशिश करें। या पुराने नियम में, यदि आप भविष्यवक्ता यशायाह के पास वापस जाते हैं, और आप किताब पढ़ना शुरू करते हैं, तो आपको जो चीज़ें करनी चाहिए उनमें से एक यह समझना है कि क्या चल रहा था जिसके कारण यशायाह को पहली बार किताब लिखनी पड़ी। और आपको निर्वासन की ओर ले जाने वाली स्थिति को समझने की आवश्यकता है क्योंकि राष्ट्र कैद में, निर्वासन में जाने के लिए तैयार था।

और पुस्तक को बेहतर ढंग से समझने के लिए और लेखक ने इसे पहले स्थान पर क्यों लिखा, इसके लिए कुछ परिस्थितियाँ सामने आईं। इसलिए, हमने सीखा है कि बाइबिल की पुस्तकों को समझने में सबसे महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांतों में से एक उन्हें उनके मूल ऐतिहासिक संदर्भ के प्रकाश में समझना है और लेखक कौन था, उसकी स्थिति क्या थी, वह इसे पहले स्थान पर क्यों लिख रहा था, उसके पाठक कौन थे और क्या समस्या थी या वे कौन से मुद्दे थे जिन्हें लेखक संबोधित करने का प्रयास कर रहा था। दूसरे शब्दों में, हम महसूस करते हैं कि नए नियम के दस्तावेज़ शून्य में नहीं लिखे गए थे, बल्कि विभिन्न संकटों और स्थितियों के लिए देहाती प्रतिक्रियाओं के रूप में लिखे गए थे।

अब मैंने इस बारे में बात करने में थोड़ा समय बिताया है, यह दिलचस्प है कि जब रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने की बात आती है तो हम इसे अनदेखा कर देते हैं। लेकिन जब प्रकाशितवाक्य की किताब जैसी किताब पढ़ने की बात आती है तो हम इस सिद्धांत की उपेक्षा क्यों करते हैं? और इसलिए फिर से, हम या तो पुस्तक को नजरअंदाज कर देते हैं या दूसरा तरीका यह है कि हम सीधे आधुनिक समय की समानताओं पर पहुंच जाते हैं, जो फिर से, ऐतिहासिक रूप से दूसरी शताब्दी ईस्वी से घटित होता हुआ प्रतीत होता है, वस्तुतः प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के बाद। लेकिन हम रहस्योद्घाटन को आधुनिक समय की घटनाओं और हमारे समय में होने वाली चीजों के अनुरूप पढ़ना शुरू करते हैं।

हम दोनों के बीच एक तात्कालिक पत्राचार और संबंध बनाते हैं जैसे कि रहस्योद्घाटन वास्तव में हमारे 21वीं सदी के राजनीतिक वातावरण और तकनीकी और ऐतिहासिक स्थिति में जो कुछ भी चल रहा है उसकी भविष्यवाणी कर रहा था। लेकिन मैं यह सुझाव देकर शुरुआत करना चाहता हूं कि हमें रहस्योद्घाटन को नए नियम और पुराने नियम की किसी भी अन्य पुस्तक की तरह मानने की ज़रूरत है, और वह यह है कि इसे इसके प्रकाश में पढ़ें, सबसे पहले, इसकी अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रकाश में। हमें इसे विशिष्ट ऐतिहासिक स्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में पढ़ने की आवश्यकता है।

हमें इसे सबसे पहले पहली शताब्दी में पाठकों के एक समूह के लिए लिखी गई चीज़ के रूप में पढ़ने की ज़रूरत है। हम वास्तव में पहली शताब्दी में चर्चों का एक समूह देखेंगे जो कई मुद्दों और समस्याओं और संकटों का सामना कर रहे थे। और इसलिए, मैं जो करना चाहता हूं वह यह है कि पहली शताब्दी में क्या चल रहा था, जिसके कारण जॉन को यह पुस्तक लिखनी पड़ी, उसे थोड़ा खोलने का प्रयास करने में थोड़ा समय व्यतीत करना है।

फिर, मेरी राय में, जॉन ने सिर्फ बैठ कर यह सपना हवा में नहीं देखा, बल्कि वह वास्तव में पहली शताब्दी में संस्कृति में रहने वाले चर्चों के एक समूह में मुद्दों और समस्याओं की एक विशिष्ट श्रृंखला का जवाब दे रहा था। पर्यावरण और साम्राज्य जो उस दिन अधिकार और नियंत्रण का संचालन कर रहा था। अब, मुझे लगता है कि इसका आरंभिक बिंदु स्वयं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से ही है। रहस्योद्घाटन हमें उस स्थिति के बारे में काफी कुछ बताता है जिसे वह वास्तव में संबोधित कर रहा था।

और ऐसा अध्याय 2 और 3 में होता है, और जब हम वास्तव में पुस्तक पर काम करना शुरू करेंगे तो हम उन अध्यायों को अधिक विस्तार से देखेंगे। लेकिन अध्याय 2 और 3 में, हम पाते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में सात ऐतिहासिक चर्चों के लिए लिखी गई है जो पश्चिमी एशिया माइनर, या आधुनिक तुर्की में मौजूद थे। और यह कि वे चर्च वास्तव में ऐतिहासिक चर्च थे और कई मुद्दों और समस्याओं का सामना कर रहे थे।

एक चर्च इफिसस शहर में मौजूद है, एक चर्च स्मिर्ना नामक शहर में है, एक चर्च पेर्गमम नामक शहर में है, एक चर्च लॉडिसिया नामक शहर में है, और कुछ अन्य भी हैं। लेकिन शुरुआती बिंदु यह समझना है कि प्रकाशितवाक्य सात वास्तविक चर्चों के लिए लिखा गया है जो ऐतिहासिक रूप से अस्तित्व में थे और पर्यावरण और जिस संदर्भ में उन्होंने खुद को पाया था, उसे देखते हुए कई मुद्दों का सामना कर रहे थे। मुख्य मुद्दा ये चर्च हैं, ये सभी सात चर्च, और इस क्षेत्र में उनके जैसे कई और चर्च, रोमन साम्राज्य के ठीक बीच में स्थित थे।

रोमन साम्राज्य उस समय का राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति केंद्र था। इसने वास्तव में कई अन्य महत्वपूर्ण साम्राज्यों का अनुसरण किया, जैसे कि सिकंदर से यूनानी साम्राज्य का शासन और फ़ारसी साम्राज्य, आदि, आदि, बेबीलोन साम्राज्य तक। लेकिन अब रोमन साम्राज्य उन सभी को पीछे छोड़ देता है और उस समय की राजनीतिक और, फिर से, धार्मिक, सैन्य और आर्थिक शक्ति के रूप में उभरता है।

और इन सात चर्चों ने स्वयं को रोमन शासन के ठीक मध्य में रहते हुए पाया। अब, रोमन साम्राज्य ने उस समय तक किसी भी ज्ञात साम्राज्य या किसी भी ज्ञात राज्य से परे अपनी सीमाओं का विस्तार किया। और जैसे-जैसे रोमन साम्राज्य फैला, उसने अपने शासन को कैसे विभाजित किया, जैसे-जैसे उसका आधिपत्य सारी भूमि पर बढ़ता गया, जिस तरह से उसने इस बड़े और व्यापक राज्य पर अपना शासन बनाए रखा, उसे प्रांतों में विभाजित करना था, कुछ हद तक राज्यों की तरह .

और उन प्रांतों पर शासक होंगे। और यह एक तरीका था जिससे रोम अपने विशाल और बढ़ते साम्राज्य पर नियंत्रण रखता था। ये सभी सात चर्च रोमन शासन और रोमन साम्राज्य के केंद्र में स्थित उन प्रांतों में से एक में स्थित थे।

अब, रोम के बारे में बहुत, बहुत जल्दी से थोड़ा सा रेखांकन करना है ताकि आप समझ सकें कि पहली शताब्दी में इन सात चर्चों और उनके जैसे कई चर्चों का क्या मुकाबला था। रोम, कम से कम दुनिया की नजर में और रोम की अपनी नजर में, रोम पूरे साम्राज्य में शांति और समृद्धि लेकर आया था। दूसरे शब्दों में, इसके बढ़ते आधिपत्य और संपूर्ण भूमि पर इसके प्रसार को मूलतः एक सकारात्मक चीज़ के रूप में देखा गया।

हाँ, रोम के अपने आलोचक थे और ऐसे लोग भी थे जो रोम के शासन के प्रसार और उसके काम करने के तरीके से खुश नहीं थे। लेकिन आम तौर पर, विशेष रूप से रोम को ही देखा जाता था, और रोम ने खुद को पूरी दुनिया के लिए एक परोपकारी के रूप में चित्रित किया था। रोम ने पूरे साम्राज्य में शांति ला दी थी।

इससे समृद्धि आई। रोम के शासन के अधीन रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने इसके आशीर्वाद का अनुभव किया और इसलिए यह वास्तव में रोम के प्रति कृतज्ञता का ऋणी है क्योंकि रोम उन सभी आशीर्वादों के लिए जिम्मेदार था जो उसके नागरिकों ने आनंद लिया, वे सभी जो उसके शासन के अधीन थे। इसकी सैन्य ताकत इसके शासन को फैलाने और विद्रोही और हानिकारक देशों और लोगों पर विजय प्राप्त करने में मदद करने के लिए जिम्मेदार थी और तथाकथित मिथकों में से एक जिस पर रोम आधारित था, उस वाक्यांश में परिलक्षित होता है जिसे आपने शायद सुना होगा, वह है शांति रोम का।

रोम शांति लाने के लिए जाना जाता था और इसका एक हिस्सा अपनी सैन्य शक्ति के माध्यम से विद्रोह को दबाने, चीजों को नियंत्रण में रखने और यह सुनिश्चित करने में सक्षम था कि पूरे साम्राज्य में शांति बनी रहे। जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, यह आर्थिक समृद्धि के लिए भी जिम्मेदार था। रोम स्वर्ण युग या स्वर्ण युग की शुरुआत के लिए जाना जाता था।

रोम संपूर्ण भूमि पर न्याय और धार्मिकता लाने के लिए भी जाना जाता था। अब हालांकि, इन सबके पीछे यह तथ्य है कि रोम ने सोचा था कि उसे देवताओं द्वारा भूमि पर शासन करने और शांति और समृद्धि लाने के लिए चुना गया था। रोम खुद को और अपने शासकों, सम्राटों को मूल रूप से दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में देखता था।

यहां तक कि सम्राट को स्वयं देवताओं की इच्छा के एजेंट के रूप में देखा जाने लगा और सभी देवताओं जैसे ज़ीउस और अन्य, कुछ प्रसिद्ध ग्रीक और रोमन देवताओं के रूप में, सम्राट को मूल रूप से देवताओं की इच्छा को पूरा करने के लिए देखा जाने लगा और वह जल्द ही स्वयं सम्राट को भी वास्तव में कभी-कभी भगवान के रूप में माना जाने लगा। विशेष रूप से सम्राटों की मृत्यु के बाद, लेकिन ऐसा लगता है कि बाद में भी जीवित सम्राटों को भगवान के रूप में माना जा सकता था और उन्हें भक्ति और निष्ठा और किसी की पूजा के योग्य माना जाता था। यहां तक कि भगवान और भगवान की उपाधि भी कुछ सम्राटों के लिए स्पष्ट रूप से लागू की जा सकती है।

जिस तरह से इसे लागू किया गया था, जिस तरह से रोम की दैवीय स्थिति और इसके पीछे के देवताओं और यहां तक कि स्वयं सम्राट को मान्यता दी गई थी, जिस तरह से इसे लागू किया गया था उसे सम्राट पंथ के रूप में जाना जाता है। अर्थात्, सम्राट पंथ रोम और उसके सम्राट के प्रति पूजा और निष्ठा को बढ़ावा देने के तरीकों की एक प्रणाली मात्र थी। और आमतौर पर, यदि आप रोमन साम्राज्य में एशिया माइनर के किसी प्रांत में एक विशिष्ट ग्रीको-रोमन शहर या रोमन शहर से गुजरेंगे, तो आप न केवल विदेशी देवताओं के समर्पण में बल्कि सम्राट के सम्मान में भी मंदिर बनाए हुए देखेंगे। वह स्वयं।

आपको सम्राटों की छवियाँ, छवियाँ और मूर्तियाँ, यहाँ तक कि कुछ दीवारों पर शिलालेख, और रोम की दैवीय स्थिति और यहाँ तक कि सम्राट और वह सब जो सम्राट ने आपके लिए किया था, के अन्य दृश्य अनुस्मारक देखेंगे। इसलिए, इन अनुस्मारकों का उद्देश्य सम्राट के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करने और यहां तक कि उसकी पूजा करने को लागू करना और प्रोत्साहित करना था। इनमें से कई कस्बे, इनमें से कुछ कस्बे जिन्हें जॉन रोमियों 2 और 3 में सात चर्चों में संबोधित करता है, मुझे खेद है, प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में मंदिर वार्डन के रूप में भी जाना जाता था।

यह वह व्यक्ति है जो सम्राट पंथ के कामकाज को बनाए रखने और यहां तक कि लागू करने के लिए जिम्मेदार था। यह कृतज्ञता के ऋण को स्वीकार करने की यह पूरी प्रणाली है कि आप उन सभी आशीर्वादों के लिए रोम और रोमन सम्राट के आभारी हैं जो उन्होंने आपके लिए प्रदान किए थे। और यहाँ तक कि सम्राट के सम्मान में सभी प्रकार के उत्सव भी होते थे जिनमें आप भाग ले सकते थे।

यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि इनमें से कुछ शहर वास्तव में आरंभ में स्वयं सम्राट थे, और रोम पर सम्राटों की एक श्रृंखला द्वारा शासन किया गया था, लेकिन आरंभ में कुछ सम्राटों ने वास्तव में इनमें से कुछ शहरों में मंदिरों के निर्माण को मंजूरी दी थी। कुछ अन्य शहरों में, यह केवल लोग ही थे जिन्होंने सम्राट के सम्मान में सम्राट के नाम पर एक मंदिर बनाने का निर्णय लिया। लेकिन प्रकाशितवाक्य 2 और 3 के सभी सात शहरों या प्रकाशितवाक्य 2 और 3 के सात शहरों के सभी चर्चों में एक सक्रिय सम्राट पंथ था, और उनमें से कई में सम्राट के सम्मान के साथ-साथ अन्य देवताओं के सम्मान में मंदिर भी थे। उन शहरों के भीतर.

अब, फिर से, मामले को और अधिक दिलचस्प बनाने के लिए, सम्राट पंथ या वह प्रणाली जो सम्राट और यहां तक कि रोम के देवताओं की पूजा को बनाए रखती थी और लागू करती थी, यह संपूर्ण सम्राट पंथ और पूजा प्रणाली और इसके त्यौहार और समारोह और इसके मंदिर और मूर्तियाँ थीं। इनमें से कई शहरों के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में भी एकीकृत किया गया। उदाहरण के लिए, यदि आपने रोमन साम्राज्य में पहली शताब्दी के किसी शहर में एक निश्चित नौकरी रोक रखी थी, चाहे वह व्यावसायिक गतिविधि हो या कुछ और, अक्सर यह उन अवसरों और समय से जुड़ा होता था जब आप वास्तव में सम्राट की पूजा और आराधना में संलग्न होते थे। भगवान। कुछ शहरों में मौजूद कई व्यापार संघों के संरक्षक देवता होंगे, और यह अकल्पनीय होगा कि आप इनमें से किसी एक संघ से संबंधित होंगे या आप इनमें से किसी एक शहर के भीतर एक निश्चित कार्य करेंगे और अपना आभार नहीं दिखाएंगे। देवताओं के सम्मान में या सम्राट के सम्मान में निष्ठा दिखाने और इनमें से कुछ त्योहारों और आयोजनों में भाग लेने के रूप में, जो आर्थिक और अन्यथा आशीर्वाद के लिए जिम्मेदार था, जो आपने अपने काम के माध्यम से प्राप्त किया था।

तो, पूरे साम्राज्य में व्याप्त शांति के लिए कौन जिम्मेदार था? आशीर्वाद, सामग्री और अन्य के लिए कौन जिम्मेदार था? आपकी समृद्धि और खुशहाली के लिए कौन जिम्मेदार था? न्याय आदि आदि के लिए कौन उत्तरदायी था? खैर, अंततः रोम और उसके सम्राट को उनके द्वारा किए गए कृत्य के लिए स्वीकार करने से इंकार करना अत्यधिक कृतघ्नता, यहां तक कि विद्रोह का भी संकेत होता, खासकर ऐसे समाज में जो संरक्षण को महत्व देता है और सम्मान-शर्म को महत्व देता है। सम्मान दिखाने से इंकार करना एक गंभीर उल्लंघन होगा। इस प्रकार, रोमन साम्राज्य का राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन घनिष्ठ रूप से एकीकृत था।

आज संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे कई देशों में, यह एक विदेशी अवधारणा है, और मुझे नहीं लगता कि हम समझते हैं कि रोमन साम्राज्य का आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन कितना एकीकृत और निकटता से जुड़ा था। संभवतः, फिर, रहस्योद्घाटन की पुस्तक, हालांकि तारीख

बताना महत्वपूर्ण नहीं है, और हालांकि कई विकल्प हैं, दो या तीन जो अत्यधिक संभावित हैं, ऐसा लगता है कि सबसे लोकप्रिय विकल्प यह है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक थी संभवतः 95 या 96 ई. में लिखा गया, पहली शताब्दी के अंतिम दशक के ठीक मध्य में जब उस समय रोम का सम्राट डोमीशियन था। दूसरी लोकप्रिय तारीख 60 के दशक के मध्य की है जब नीरो सम्राट था, लेकिन मुझे लगता है कि आज अधिकांश विद्वान लगभग 95 या 96 की तारीख के पक्ष में हैं और तर्क देते हैं।

मैं एक तरह से उसका अनुसरण करूंगा। मुझे लगता है कि इसके लिए अच्छे सबूत हैं, लेकिन मैं जो कुछ भी कहूंगा वह सटीक तारीख तय करने पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर नहीं होगा। तो, यह उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के बारे में थोड़ा सा है जो पूरे रोमन साम्राज्य पर शासन करती थी, और वह स्थिति जो उन प्रांतों में प्रचलित रही होगी जहां चर्च पहली शताब्दी में मौजूद थे।

अब, जैसा कि आप शायद देखना शुरू कर सकते हैं, यहां तक कि इस संक्षिप्त स्पष्टीकरण के बाद भी ईसाइयों को दुविधा का सामना करना पड़ा होगा। वास्तव में दो संभावित तरीके थे, शायद अन्य तरीके, लेकिन दो प्रमुख तरीके, सात शहरों में चर्चों में से एक से संबंधित एक ईसाई जिसे प्रकाशितवाक्य 2 और 3 संबोधित करता है, दो प्रमुख तरीके वे ऐसी स्थिति पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं। उनमें से कुछ विरोध कर सकते थे।

वे सीज़र, रोमन साम्राज्य को भगवान और भगवान और दिव्य के रूप में स्वीकार करने में भाग लेने से इनकार कर सकते थे, सम्राट पंथ में भाग लेने से इनकार कर सकते थे, सम्राट की पूजा के सम्मान में दावतों और अन्य समारोहों में भाग लेने से इनकार कर सकते थे, जाने से इनकार कर सकते थे। साथ ही जब उनके व्यापार संघों ने यह स्वीकार करने के अवसर दिए कि उनकी समृद्धि सम्राट से आई है, तो उन्होंने खुद को रोमन साम्राज्य की संस्कृति और अर्थव्यवस्था और राजनीति और धर्म में पूरी तरह से डूबने से इनकार कर दिया। वे इसका विरोध कर सकते थे क्योंकि, उनके लिए, यह बस इस तथ्य के विरोध में आया था कि केवल एक ही उद्धारकर्ता और भगवान है, और वह यीशु मसीह है। और किसी और को स्वीकार करना, ग्रीको-रोमन संस्कृति के साथ खुद को पूरी तरह से शामिल करना इसका उल्लंघन करेगा या यीशु मसीह के विशेष आधिपत्य से समझौता करेगा।

वे यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में कैसे दावा कर सकते हैं जब यहाँ का सम्राट भी यही दावा कर रहा है? तो, इसके कारण, कई लोगों ने विरोध किया और परिणाम भी भुगते, जो कुछ हद तक बहिष्कार या उत्पीड़न भी हो सकता है। अब, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि इस बिंदु पर, जब हम उत्पीड़न के बारे में बात करते हैं, तो इस बिंदु पर ईसाइयों के साम्राज्य-व्यापी उत्पीड़न जैसा कुछ भी नहीं है जहां हम रोमन बटालियनों के शहरों में जाने और जाने की तस्वीर अपने दिमाग में लाते हैं। घर-घर जाना और ईसाइयों को सड़क पर घसीटना और अंततः जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए रंगभूमि में ले जाना। ऐसा बाद में दूसरी शताब्दी या उसके आसपास हुआ।

लेकिन इस बिंदु पर, अधिकांश उत्पीड़न अधिक छिटपुट और स्थानीय था। दूसरे शब्दों में, यह स्वयं सम्राट नहीं था जो आधिकारिक तौर पर ईसाइयों के खिलाफ प्रतिशोध की भावना से घूम रहा था। यह स्थानीय स्तर पर अधिक था।

स्थानीय स्तर पर अधिकांश अधिकारी और अधिकारी जो सम्राट का पक्ष लेने के इच्छुक थे, इसे लागू कर रहे थे और उन ईसाइयों के लिए समस्याएँ पैदा कर रहे थे जिन्होंने समझौता करने से इनकार कर दिया था। तो, इस बिंदु पर, सम्राट द्वारा शुरू किए गए इस साम्राज्य-व्यापी, आधिकारिक तौर पर स्वीकृत उत्पीड़न जैसा कुछ भी नहीं है। और वास्तव में, जॉन अब तक हमें बताता है कि वह केवल, और भी बहुत कुछ हो सकता है, लेकिन जॉन हमें बताता है कि अब तक वह केवल एक ही व्यक्ति के बारे में जानता है जो मर चुका है।

अध्याय 2, श्लोक 13 में, एंटीपास नाम का एक व्यक्ति अपने विश्वास के लिए मर गया। हालाँकि, जब आप प्रकाशितवाक्य को ध्यान से पढ़ते हैं, तो जॉन को उम्मीद होती है कि और भी बहुत कुछ आएगा। और आपके पास उत्पीड़न की यह बहुत मजबूत भाषा है और संतों को उनके विश्वास के लिए मार डाला गया, सिर काट दिया गया और शहीद कर दिया गया।

इसलिए, जॉन को उम्मीद है कि जाहिर तौर पर रोम और चर्च के बीच टकराव होगा। लेकिन इस बिंदु पर, वह हमें बताता है कि वह केवल उस व्यक्ति के बारे में जानता है जो मर गया है, एंटीपास नाम का एक व्यक्ति। जॉन स्वयं अपनी गवाही के कारण और सुसमाचार का प्रचार करने के कारण स्पष्ट रूप से पतमोस द्वीप पर निर्वासन में हैं।

लेकिन फिर भी, अभी तक इस व्यापक उत्पीड़न जैसा कुछ नहीं हुआ है। वह निश्चित रूप से बाद में आया। हालाँकि, विरोध करने और परिणाम भुगतने के अलावा, मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य 2 और 3 के चर्चों में एक बड़ी समस्या थी। और वह थी समझौता और शालीनता।

यह दिलचस्प है, जब आप अध्याय 2 और 3 में चर्चों को सात पत्र या सात संदेश पढ़ते हैं, तो उनमें से केवल दो रोमन साम्राज्य में पड़ोसियों और अधिकारियों के हाथों किसी भी प्रकार के उत्पीड़न और बहिष्कार का सामना कर रहे थे। अन्य पाँच चर्चों को वास्तव में अध्याय 2 और 3 के संदेशों में पुनर्जीवित यीशु द्वारा बहुत ही नकारात्मक मूल्यांकन मिलता है क्योंकि वे अपने बुतपरस्त वातावरण के साथ बहुत समझौता कर रहे हैं और अपनी स्थिति से इतने संतुष्ट हैं, विशेष रूप से एक चर्च जिसे चर्च ऑफ लॉडिसिया कहा जाता है, कि यीशु उनके बारे में कहने के लिए कुछ भी अच्छा नहीं है। सकारात्मक रिपोर्ट प्राप्त करने वाले एकमात्र चर्च दो चर्च हैं, स्मिर्ना और फिलाडेल्फिया, और वे दोनों काफी गरीब हैं और वे पीड़ित हैं क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह में अपने विश्वास के लिए एक स्टैंड लिया है।

वे उसके वफादार गवाह हैं। अन्य पाँच चर्च अपने परिवेश से इतने संतुष्ट हैं, वे उस स्थिति से समझौता करने के लिए इतने इच्छुक हैं जिसका हमने अभी रोमन साम्राज्य के साथ वर्णन किया है कि वे किसी भी परेशानी से मुक्त प्रतीत होते हैं और उन्हें वास्तव में सात में यीशु मसीह से बहुत नकारात्मक मूल्यांकन मिलता है। चर्च, शायद इनमें से कुछ चर्च चरित्र में अधिक आत्मसंतुष्ट और समझौतावादी थे, शायद वे उत्पीड़न से बचने के लिए, शायद नौकरी खोने से बचने के लिए,

बहिष्कार से बचने के लिए, यहाँ तक कि एंटीपस जैसी शारीरिक मृत्यु से बचने के लिए ऐसा कर रहे थे।

उनमें से कई जानबूझकर यह तर्क देने की कोशिश कर रहे थे कि वे यीशु मसीह की पूजा कर सकते हैं, लेकिन साथ ही सीज़र की भी पूजा कर सकते हैं, कि यीशु मसीह भगवान थे, लेकिन वे सीज़र को भी स्वीकार कर सकते थे और ऐसा करने से एंटीपास के साथ जो हुआ उससे बच सकते थे या कुछ से बच सकते थे। समस्याएँ जो अन्य चर्च जो स्टैंड ले रहे थे, अनुभव कर रहे थे। यह भी संभव है कि दूसरों को यह एहसास ही नहीं हुआ कि वे क्या कर रहे थे, कि वे अपने परिवेश और अपनी स्थिति में इतने आत्मसंतुष्ट हो गए थे कि उन्हें यह एहसास ही नहीं हुआ कि उन्होंने अपने परिवेश में इतना बंधकर होकर यीशु मसीह के प्रति अपनी गवाही से किस हद तक समझौता किया था। और पर्यावरण और रोम के धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन के कारण वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि क्या हो रहा था। और इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, साथ ही अध्याय 2 और 3 में सात चर्च, लेकिन प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक एक संदेश होने जा रही है, सबसे पहले, आराम का, जो कि आराम और सांत्वना और प्रोत्साहन है उन दो चर्चों और उनके जैसे किसी भी अन्य चर्च के लिए दृढ़ रहें, उन चर्चों के लिए जो समझौता करने से इनकार करने के कारण पीड़ित हैं और क्योंकि उन्होंने अपने वफादार गवाह और गवाही को बनाए रखा है, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण वाक्यांश है।

अध्याय 2 और 3 में उन दो चर्चों और उनके जैसे किसी भी चर्च के लिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उनके लिए सांत्वना और प्रोत्साहन का स्रोत होगी। लेकिन जो लोग समझौता कर रहे हैं, उनके लिए जो रोमन साम्राज्य में अपने आस-पास के माहौल से इतने संतुष्ट हो गए हैं, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक चेतावनी और उपदेश का स्रोत होगी। यह पाठकों को उनकी संतुष्टि से बाहर निकालने का काम करेगा।

यह उन्हें जगाने का काम करेगा, उन्हें उनकी स्थिति को समझने और यह समझने के लिए प्रोत्साहित करेगा कि उन्होंने किस हद तक समझौता किया है, और उन्हें पश्चाताप करने और विशेष पूजा और यीशु मसीह के प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता की ओर मुड़ने के लिए बुलाएगा, चाहे परिणाम कुछ भी हों। लाएगा। तो, प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पुस्तक की व्याख्या पर इसके प्रभाव को संक्षेप में प्रस्तुत करना। इसके प्रकाश में, मेरे लिए रहस्योद्घाटन का उद्देश्य रोमन साम्राज्य की वास्तविक प्रकृति को उजागर करना प्रतीत होता है।

यानी, यह रोमन साम्राज्य के बारे में एक प्रति दृष्टिकोण या प्रति मूल्यांकन पेश करेगा जो रोम स्वयं प्रस्तुत कर रहा है और उसकी प्रतिमाएं और उसका मीडिया और उसका प्रचार रोमन साम्राज्य के चरित्र और प्रकृति के बारे में है और दुनिया इसे बड़े पैमाने पर कैसे देखती है। इसके बजाय, रहस्योद्घाटन एक आलोचना, एक भविष्यसूचक आलोचना पेश करेगा और रोमन साम्राज्य की वास्तविक प्रकृति को उजागर करेगा। याद रखें हमने कहा था कि रहस्योद्घाटन या सर्वनाश की पुस्तक के शीर्षक का अर्थ है अनावरण, अनावरण।

रहस्योद्घाटन रोम को उसके असली रंग में उजागर करने जा रहा है, उसे उजागर करने जा रहा है कि वह वास्तव में क्या है, उसे दिखाने जा रहा है कि वह वास्तव में क्या है। यह एक भ्रष्ट,

ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक, हिंसक व्यवस्था है जो ईश्वर का विरोध करती है, अपनी शक्ति का निरंकुश उपयोग करती है, यह स्वयं को ईश्वर के रूप में स्थापित करती है, यह अपने लोगों से पूजा की मांग करती है और इसे हिंसा द्वारा बनाए रखती है। रोम के बारे में सब कुछ उसके विपरीत है जो कोई विशेष रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में पाता है, लेकिन जो रहस्योद्घाटन की पुस्तक में मिलता है।

तो, रहस्योद्घाटन रोम की एक आलोचना है। रोम वह सब कुछ नहीं है जो इसे माना जाता है। रोम वैसा नहीं है जैसा वह होने का दावा करता है।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य रोमन साम्राज्य में उनके चर्चों के लिए एक आह्वान है कि वे रोम को उसके असली रंग में देखें और देखें कि यह वास्तव में क्या है। तो, रहस्योद्घाटन एक स्तर पर रोम की वैचारिक आलोचना है। फिर, यह मूर्तिपूजक, ईश्वरविहीन, हिंसक, दमनकारी शासन और साम्राज्य के रूप में रोम की वास्तविक प्रकृति को उजागर करता है जिसका ईसाइयों को विरोध करना चाहिए।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य, रोमन साम्राज्य की प्रकृति के कारण, रहस्योद्घाटन ईश्वर और यीशु मसीह की विशेष पूजा और आज्ञाकारिता का आह्वान है, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो। ईसाइयों के लिए, फिर से, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक होगी, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो सताए गए हैं, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आराम का स्रोत होगी, दृढ़ रहने और अपनी वफादार गवाही जारी रखने के लिए प्रोत्साहन का स्रोत होगी, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। समझौता करने वाले चर्चों के लिए, यह पश्चाताप करने का आह्वान, जागने का आह्वान और विरोध करने का आह्वान होगा, ऐसा न हो कि वे भी रोमन साम्राज्य के समान भाग्य में भाग लें।

तो, प्रकाशितवाक्य के अनुसार, यीशु ही प्रभु है। यीशु स्वयं ईश्वर और उद्धारकर्ता हैं। वह शांति लाने वाला है।

वह वह है जो धार्मिकता लाता है, रोम या उसके सम्राट नहीं। अब, केवल रहस्योद्घाटन की यह समझ, जहां तक उसकी पृष्ठभूमि की प्रतिक्रिया है, मुझे लगता है कि मुझे रहस्योद्घाटन की एक बहुत ही सामान्य समझ के रूप में जो कुछ भी मैं अभी भी सुनता हूं, उसे आंशिक रूप से खारिज करने में मदद करता है। और यह लगभग दूसरी श्रेणी में आता है जिसका वर्णन हमने रहस्योद्घाटन पर चर्च की प्रतिक्रिया के रूप में किया है।

पहला एक जुनून था। दूसरा था उपेक्षा, क्योंकि यह इतना अजीब है और इसमें इतने सारे अजीब चित्र हैं, जैसे मानवीय विशेषताओं वाले टिड्डे, आदि, आदि, कि कई लोग इसे अस्वीकार कर देते हैं। लेकिन प्रकाशितवाक्य की सामान्य व्याख्या यह है कि, इसके बदले में, पुस्तक के साथ वास्तव में जूझने की कोशिश करने के बदले, हम ऐसी बातें कहते हैं, ठीक है, मुझे पता है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक किस बारे में है।

भगवान जीतता है। और मैं नहीं जानता कि मैंने ऐसा कितनी बार सुना है। अभी एक दिन, मैं किसी से बात कर रहा था जिसने कहा, और उसके शब्द सचमुच थे, मुझे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

मैं जानता हूँ कि यह किस बारे में है। भगवान जीतता है। अब, उस कथन में चाहे कितनी भी सच्चाई क्यों न हो, यह रहस्योद्घाटन वास्तव में किस बारे में है, उससे निपटने के लिए बहुत दूर, बहुत सीमित और बहुत छोटा है।

हाँ, रहस्योद्घाटन हमें ईश्वर की जीत के बारे में बताता है, लेकिन क्या यह सब कुछ है? जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं, तो आप पाएंगे कि यह ईश्वर की जीत के बारे में नहीं है। यह इस बारे में है कि भगवान कैसे जीतते हैं। ईश्वर अपने पुत्र, यीशु मसीह को भेजकर, ईश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने पुत्र को बलि के वफादार साक्ष्य के माध्यम से वध किए गए मेमने के रूप में भेजकर जीतता है।

मेमने की वफादार गवाही को कष्ट सहने और अपने पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर लगभग विरोधाभासी रूप से जीतता है। और यह एक किताब भी है कि चर्च कैसे विजय प्राप्त करता है। चर्च अपने वफादार गवाह के माध्यम से भी जीत हासिल करता है, यहां तक कि यदि आवश्यक हो तो मृत्यु तक भी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रतिक्रिया मांगती है। यह सिर्फ भगवान की जीत के बारे में नहीं है। यह परमेश्वर के लोगों से प्रतिक्रिया की मांग करता है।

यह परमेश्वर के लोगों से आह्वान करता है कि मेमना जहां भी जाए, उसका अनुसरण करें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमारे सामने यह प्रश्न उठाती है कि वास्तव में आपकी पूजा के योग्य कौन है? वास्तव में आपकी निष्ठा, आपकी भक्ति और आपकी पूजा के योग्य कौन है? वास्तव में आपकी आज्ञाकारिता के योग्य कौन है? क्या यह सम्राट है? या यह कोई अन्य मानव शासक है? क्या यह कोई अन्य मानवीय संस्था या इकाई है? या क्या केवल ईश्वर और उसका मेमना, यीशु मसीह ही आपकी पूजा के एकमात्र उद्देश्य हैं? इसलिए, हमें रहस्योद्घाटन को केवल ईश्वर की जीत वाली पुस्तक के रूप में देखने से परे देखने की जरूरत है। इसमें कुछ सच्चाई है, लेकिन इसका दायरा बहुत सीमित है।

रहस्योद्घाटन, फिर से, हमें बताता है कि भगवान कैसे जीतते हैं? उसकी पीड़ा के माध्यम से मसीहा। एक मारे गए मेमने के माध्यम से। ईश्वर विजय प्राप्त करता है, लगभग विरोधाभासी रूप से, और निश्चित रूप से रोमन साम्राज्य के विपरीत, ईश्वर एक पीड़ित मेमने के माध्यम से विजय प्राप्त करता है जो अपने लोगों के लिए आता है और मर जाता है।

यह इस बारे में भी है कि परमेश्वर के लोग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। परमेश्वर के लोग कैसे जय पाते हैं? परमेश्वर के लोग कैसे जीतते हैं? उसी मार्ग से यीशु ने किया। उनकी वफादार गवाही के माध्यम से, यहाँ तक कि मृत्यु के बिंदु तक भी।

और रहस्योद्घाटन भी भगवान और मेमने, यीशु मसीह की विशेष आज्ञाकारिता और विशेष पूजा का आह्वान है। हमें यह दिखाना कि कोई भी अन्य व्यक्ति, कोई अन्य वस्तु हमारी विशेष पूजा और भक्ति के योग्य नहीं है। अब, प्रकाशितवाक्य को पढ़ने में देखने वाली दूसरी बात न केवल यह है कि किताब क्यों लिखी गई, ऐतिहासिक परिस्थितियों, सात चर्चों और रोमन साम्राज्य में उनकी स्थिति और उसके कारण आने वाली चुनौतियों को देखते हुए, बल्कि फिर दूसरे से पूछना है प्रश्न, रहस्योद्घाटन किस प्रकार की पुस्तक है? हम किस प्रकार की पुस्तक के साथ काम कर रहे हैं? अर्थात्, हम किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं, और इसकी क्या आवश्यकता है, और इसके लिए यह कैसे आवश्यक है कि हम वास्तव में इसे पढ़ें और इसका अर्थ समझने का प्रयास करें? दूसरे शब्दों में, हमें बस रहस्योद्घाटन को उस प्रकार के साहित्य के प्रकाश में पढ़ना होगा जो जॉन लिख रहा था और अपने पहले पाठकों को संचारित कर रहा था, वह क्या संचार करना चाहता था, और सबसे अधिक संभावना है कि उन्होंने इसका सबसे अच्छा अर्थ कैसे निकाला होगा। हम समझने में सक्षम हैं।

फिर, यह दिलचस्प है, कि यह एक और महत्वपूर्ण कदम है जो आपको अक्सर हेर्मेनेयुटिक्स कक्षाओं या बाइबिल अध्ययन विधियों कक्षा में पढ़ाया जाता है, आपको यह समझने की आवश्यकता है कि किस प्रकार का साहित्य है। तो, हम समझते हैं कि हम सुसमाचार को उसी तरह नहीं पढ़ते हैं जिस तरह से हम पॉल के पत्रों में से एक को पढ़ते हैं, या हम पुराने नियम की कविता को उसी तरह नहीं पढ़ते हैं जिस तरह से हम भविष्यवाणी पाठ या कथात्मक पाठ या ऐसा कुछ पढ़ते हैं। लेकिन एक बार फिर, जब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने की बात आती है तो इसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है या गलत समझा जाता है।

और मुझे संदेह होगा कि कारणों में से एक, शायद, वास्तव में दो कारण हैं। नंबर एक, जब रहस्योद्घाटन को पढ़ने की बात आती है तो हमारे पास अनुसरण करने के लिए वास्तव में अच्छे मॉडल नहीं हैं। और यहां तक कि जब रहस्योद्घाटन का प्रचार हमारे मंच से किया जाता है, तब भी, उपेक्षा की प्रतिक्रिया अक्सर प्रबल होती है।

आम तौर पर, आप अध्याय 2 और 3 पर उपदेश सुनेंगे, कभी-कभी अध्याय 1 पर, और कभी-कभी कोई अध्याय 4 और 5 पर भी आ जाएगा, लेकिन शायद ही आप प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब को उपदेशों की श्रृंखला के विषय के रूप में पाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि मुझे लगता है कि पूर्वी रूढ़िवादी व्याख्याकार में, रहस्योद्घाटन की पुस्तक बिल्कुल भी भूमिका नहीं निभाती है। और जो पाठ एक भूमिका निभाते हैं, वे फिर से अध्याय 2 और 3 या कुछ भजन या उसके जैसा कुछ हैं।

तो, सबसे पहले, हमारे पास अक्सर प्रकाशितवाक्य को पढ़ने और व्याख्या करने के अच्छे मॉडल नहीं होते हैं। हालाँकि मुझे और भी बहुत से उपयोगी संसाधन और पुस्तकें सामने आ रही हैं जिनके बारे में मुझे लगता है कि उन्हें और अधिक व्यापक रूप से प्रचारित करने की आवश्यकता है। लेकिन दूसरी बात यह है कि हमारे आधुनिक समय में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ हमारे पास कोई अच्छी उपमा नहीं है।

मैं बाद में कुछ ऐसे जोड़े का सुझाव दूँगा जो काफी करीब हों। लेकिन आखिरी बार आप कब बैठे थे और सर्वनाश पढ़ा था? या आखिरी बार आप कब बैठे थे और एक लेख लिखा था? हम वस्तुतः हर दिन पत्र पढ़ते हैं। अब यह आमतौर पर कभी-कभी ईमेल के रूप में होता है।

हम उपन्यास और कहानी प्रकार के साहित्य पढ़ने के आदी हैं। कभी-कभी हम अभी भी कविता पढ़ने या लिखने में डूबे रहेंगे। लेकिन वास्तव में हमारे आधुनिक समय में रहस्योद्घाटन की पुस्तक के साथ कोई करीबी समानता नहीं है।

और यह इसे मुश्किल बना सकता है जब हमारे पास किताब की ओर खुद को उन्मुख करने में मदद करने के लिए इसकी तुलना करने के लिए वास्तव में कुछ भी नहीं है। ईडी हिर्श नामक एक प्रसिद्ध साहित्यिक आलोचना विद्वान ने कहा कि अर्थ शैली से बंधा हुआ है। इससे उनका तात्पर्य केवल यह था कि साहित्य के किसी भी टुकड़े का अर्थ उसकी साहित्यिक शैली पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार का साहित्य है।

यही वह शैली है, जिसमें हम अक्सर शब्दों और वाक्यों में अर्थ के बारे में सोचते हैं। लेकिन शैली ही, साहित्य का प्रकार भी अर्थ रखता है। या अर्थ सुझाएं कि हमें पाठ से कैसे अर्थ निकालना है।

अब, रहस्योद्घाटन की साहित्यिक शैली को सही ढंग से समझने से हमें सभी समस्याओं को हल करने में मदद नहीं मिलती है। यहां तक कि जो लोग इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि यह किस प्रकार का साहित्य है, वे अभी भी इस बात पर असहमत हैं कि वे प्रकाशितवाक्य के कुछ अंशों की व्याख्या कैसे करते हैं और यहां तक कि समग्र रूप से वे प्रकाशितवाक्य के साथ क्या करते हैं। लेकिन साथ ही, रहस्योद्घाटन की शैली को समझने से हमें कम से कम सही कदम पर उठने में मदद मिलती है और गलत कदम पर नहीं।

अर्थात्, यह हमें सही शुरुआत करने और रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने की कोशिश में गलत कदमों और गलत शुरुआत से बचने में मदद करता है। हां, रहस्योद्घाटन के पास अभी भी अपना तर्क है, इसकी अभी भी अपनी अनूठी संरचना है और जिस तरह से इसे एक साथ रखा गया है उस पर हमें ध्यान देना होगा, जिस पर हर कोई सहमत नहीं होगा। लेकिन साथ ही, उस साहित्यिक शैली या साहित्यिक प्रकार को समझने से जिसमें प्रकाशितवाक्य लिखा गया था या जिसे जॉन ने लिखा था, हमें दाहिने पैर पर खड़े होने, रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने और पढ़ने में सही शुरुआत करने में मदद मिलेगी।

अब, आज, जाहिर है, हम हर दिन शैली की पहचान करते हैं। हम ऐसा सहज रूप से करते हैं। और सबसे आसान उदाहरण जिसे बहुत से लोग इंगित करना पसंद करते हैं वह है जब आप सुबह का अखबार उठाते हैं।

यदि आप अपना अखबार उठाते हैं और पन्नों पर अंगूठा लगाना शुरू करते हैं, तो आप लगभग अनजाने में शैली की पहचान करना शुरू कर देते हैं। आपको एहसास होता है कि जब आप पहले पन्ने से हास्य अनुभाग की ओर मुड़ते हैं तो आपने साहित्यिक विधाओं में एक गंभीर बदलाव और छलांग लगाई है। और उम्मीद है, आप कॉमिक्स को उसी तरह से नहीं पढ़ेंगे या उसे उसी

गंभीरता के साथ नहीं लेंगे, उसी तरह की जानकारी नहीं खोजेंगे, या उसके साथ उसी तरह व्यवहार नहीं करेंगे जैसे आप पहले पत्रों की सुर्खियों में करते हैं।

न ही आप कॉमिक्स के साथ उसी तरह व्यवहार करते हैं, जिस तरह से, उदाहरण के लिए, अखबार में कुछ पेज बाद वर्गीकृत विज्ञापनों के साथ करते हैं। आप महसूस करते हैं कि इस अखबार के भीतर यह एक अन्य प्रकार का साहित्य है। और यह मांग करता है कि मैं इसे अलग तरीके से पढ़ूं।

लेकिन आप ऐसा सहज रूप से करते हैं। आप बैठकर यह मत सोचिए कि ठीक है, अब मैं कॉमिक की ओर बढ़ गया हूं और कॉमिक में ये विशेषताएं होती हैं। और इसलिए, यहां उन सिद्धांतों की एक सूची दी गई है जिनका पालन मुझे कॉमिक की व्याख्या करने में करना है।

आप ऐसा मत कीजिये. आप ऐसा अवचेतन रूप से और सहज रूप से करते हैं। समस्या तब होती है जब हम अक्सर प्राचीन साहित्यिक विधाओं से निपटते हैं, विशेष रूप से वे जो हमारी विधाओं से बहुत अलग हैं या जिनकी हमारी आधुनिक साहित्यिक विधाओं से कोई समानता नहीं है।

हम उनसे कैसे संघर्ष करते हैं? हम उनसे कैसे निपटें? और इससे यह प्रश्न उठता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक किस प्रकार का साहित्य है? हमें रहस्योद्घाटन की पहचान किस प्रकार की साहित्यिक शैली से करनी चाहिए? शायद अधिक सटीक रूप से, कम से कम शुरू करने के लिए, यह पूछना है कि जॉन का इरादा क्या था और उसके पहले पाठक साहित्यिक शैली के संदर्भ में रहस्योद्घाटन की सबसे अधिक पहचान क्या करेंगे? संभवतः, जॉन, अगर हमें गंभीरता से लेना है कि जॉन रोमन साम्राज्य में सात ऐतिहासिक चर्चों को संबोधित कर रहे हैं, जो इस संकट का सामना कर रहे हैं कि वे अपने विश्वास को कैसे जीते हैं और क्या यीशु मसीह के साथ सीज़र की पूजा करना ठीक है। अगर हम इसे गंभीरता से लें, तो जॉन कुछ ऐसा लिख रहा होगा जिसे वे कुछ हद तक समझ सकते हैं। और इसलिए, सबसे पहले पाठकों ने रहस्योद्घाटन की पहचान किस साहित्यिक शैली से की होगी? जैसा कि मैं इस पुस्तक को देखता हूं और जैसा कि मैंने पढ़ा है कि दूसरों ने पुस्तक के बारे में क्या कहा है और टिप्पणियों और रहस्योद्घाटन के अन्य उपचारों को पढ़ा है, ऐसा लगता है कि अधिकांश लोग इस बात पर सहमत हुए हैं कि रहस्योद्घाटन में कम से कम तीन साहित्यिक प्रकारों का मिश्रण होता है।

और वह तीन साहित्यिक विधाएँ हैं जो पहली शताब्दी में प्रसिद्ध रही होंगी। और वे शैलियाँ बस एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी, और एक पत्र या एक पत्री हैं। यह दिलचस्प है कि आखिरी को आमतौर पर नज़रअंदाज कर दिया जाता है।

परन्तु एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी, और एक पत्र। रहस्योद्घाटन कम से कम उन तीनों का मिश्रण प्रतीत होता है। और ऐसा नहीं है कि जॉन ने स्वयं सोचा होगा कि वह तीन अलग-अलग प्रकारों का मिश्रण कर रहा है।

इससे भी अधिक बात यह है कि रहस्योद्घाटन के पाठकों के रूप में, हम तीन प्रकार के साहित्य को अलग कर सकते हैं जो हमें यह समझने में मदद करते हैं कि यह किस प्रकार की पुस्तक है।

और यह कैसे संचार करता है? और इससे हमें इसे पढ़ने के तरीके में क्या फर्क पड़ता है? लेकिन बात यह है कि, ये तीन साहित्यिक प्रकार, एक सर्वनाश, हालांकि हम बस एक क्षण में देखेंगे, वास्तव में सर्वनाश एक आधुनिक समय का शीर्षक है। ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि जॉन या किसी अन्य ने किसी निश्चित प्रकार की पुस्तक को संदर्भित करने के लिए एपोकैलिप्स लेबल का उपयोग किया हो। लेकिन यह अभी भी एक उपयोगी लेबल है क्योंकि जैसा कि हम देखेंगे, यह लेखों के एक समूह का मददगार ढंग से वर्णन करता है जो समान विशेषताओं और विशेषताओं को साझा करते प्रतीत होते हैं।

एक पहचानने योग्य प्रकार का लेखन जिसे पहली शताब्दी के अन्य प्रकार के साहित्य और लेखन से अलग किया जा सकता है। लेकिन ये तीन साहित्यिक प्रकार, सर्वनाश, एक भविष्यवाणी, और एक पत्र, एक पत्र, सभी पहली सदी के पाठकों को अच्छी तरह से ज्ञात थे। और बिल्कुल वैसे ही जैसे जब आप बैठते हैं और अखबार पढ़ते हैं और आप पहले पन्ने की सुर्खियों से लेकर कॉमिक्स और वर्गीकृत विज्ञापनों तक पहुंच जाते हैं, बिना यह सोचे कि आप किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं और उन्हें समझने और पढ़ने के लिए आपको किन सिद्धांतों को सक्रिय करने की आवश्यकता है, उसी तरह, पहली सदी के पाठकों ने समझ लिया होगा और पहचान लिया होगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं।

और लगभग सहज रूप से, क्योंकि वे संभवतः इस प्रकार के कार्यों से परिचित रहे होंगे। मैं संक्षेप में शुरुआत करना चाहता हूं, या व्याख्यान के इस भाग को संक्षेप में सर्वनाश से परिचित कराकर समाप्त करना चाहता हूं। अगर मैं आपसे पूछूं कि जब आप सर्वनाश शब्द के बारे में सोचते हैं तो आप क्या सोचते हैं? आपके मन में क्या आता है? आज हम आमतौर पर सर्वनाश शब्द का प्रयोग करते हैं।

और यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर हो सकता है कि इसका उपयोग विशेष रूप से गैर-ईसाई भाषा में भी कैसे किया जाता है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, सर्वनाश एक शीर्षक है जो अक्सर फिल्मों पर लागू होता है। इसलिए जब हम सर्वनाश के बारे में सोचते हैं, तो हम दुनिया के अंत के बारे में सोचते हैं, पूरे ब्रह्मांड के कुछ प्रलयकारी अंत के बारे में सोचते हैं, सर्वनाशी अनुपात की कुछ विश्वव्यापी आपदा के बारे में सोचते हैं।

इसलिए जब हम सर्वनाश के बारे में सोचते हैं, तो हम किसी अंत समय की प्रलयकारी आपदा या घटना के बारे में सोचते हैं जो इस दुनिया या इस पूरे ब्रह्मांड को समाप्त कर देती है या ऐसा ही कुछ। हालांकि मुझे विश्वास है कि पहली सदी में पाठकों ने इसे इस तरह नहीं समझा होगा। पहली शताब्दी में, जिस शब्द का हम उपयोग करते हैं, सर्वनाश, होगा, जिस शब्द का हम उपयोग करते हैं, वह एक प्रकार के साहित्य को संदर्भित करता है जिसे पहली शताब्दी के पाठकों ने समझ लिया होगा और समझ लिया होगा।

जरूरी नहीं कि दुनिया का अंत या इतिहास का प्रलयकारी अंत हो। लेकिन यह एक साहित्यिक प्रकार को संदर्भित करता है जिसे पहली सदी के पाठक समझ गए होंगे। और फिर अगले सत्र में, मैं थोड़ा समय लेना चाहता हूं और पूछना चाहता हूं कि सर्वनाश क्या है? फिर, लेबल सर्वनाश एक आधुनिक लेबल है जिसका हम उपयोग करते हैं।

जॉन और प्रथम-शताब्दी के लोगों ने आवश्यक रूप से इसका उपयोग नहीं किया। लेकिन यह एक प्रकार के पहचानने योग्य, अद्वितीय साहित्य को संदर्भित करने के लिए उपयोग करने के लिए एक उपयोगी लेबल है। इस तरह के साहित्य से उन्हें क्या समझ आया होगा? ऐसा कौन सा साहित्य है जिसे हम सर्वनाश कहते हैं? और हमें इसे कैसे पढ़ना चाहिए और इसकी व्याख्या कैसे करनी चाहिए?

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 1, परिचय और पृष्ठभूमि है।